आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 271 | ARYA SABHA MAURITIUS | *10th June to 7th July 2013*

Le Yajna nous est éternellement bénéfique

Om ! Svaryanto nāpekshanta ā dhyām – rohanti rodassi.
Yajyam yé vishwatodhāram suvidwānso viténiré.

Yajur Véda 17/68

Glossaire / Shabdārtha :

Yé – celui ou celle
Suvidwānsaha – un yogi, un très grand sage, un savant, **Yantaha** – qui pratique le yoga en observant strictement toutes les règles ou disciplines y relatives, **Na** – tout comme, **te** – il/elle, **Swaha** – beaucoup de bonheur, grande prospérité, confort extrême, béatitude, **na apekshaté** – ne désirant aucun avantage ou gain personnel, **Vishwatodhāram** – celui qui a acquis une parfaite compétence intellectuelle et spirituelle, **Yajyam** – peut accomplir toutes les exigences du yajna, **Viténiré** – celui qui pratique le yajna avec beaucoup de dévouement et de piété atteint la félicité éternelle ('Moksha' en Hindi), **Rodassi** – le ciel et la terre, **ā rohanti** – peut atteindre l'autre monde ('la félicité éternelle' ou 'la mort') quand il le veut,
Dhyām – (i) connaissance étendue dans le domaine de Yoga
(ii) l'atmosphère, l'espace

Interprétation / Anushilan

Le Yajna est le symbole du désintéressement, voire la renonciation de l'égoïsme. Les mots 'Swāhā' et 'idanna mama' font état de l'importance de cette attitude positive mentionnée plus haut.

Autant que l'on adopte la culture de 'swāhā (swa + ā + hā) c'est-à-dire, l'abnégation (self sacrifice) dans sa vie, autant cela éveillera en nous le sentiment de la fraternité universelle. *cont. on pg 4*

N. Ghoorah

।। ओ३म् प्रतिष्ठ ।।
आचार्य आर्यनरेश जी

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

गत गुरुवार २० जून को **पूज्य आचार्य आर्यनरेश जी** का मॉरीशस की धरती पर पदार्पण हुआ। आपने आर्य सभा मॉरीशस के निमन्त्रण को स्वीकार कर इस धरती को अपनी चरण-धूलि से पवित्र किया।

आचार्य जी ने दिल्ली से इंजीनियरी करने के बाद कुछेक वर्ष सिविल इंजीनियर के रूप में कार्य किया। बाल्यावस्था से ही आप के हृदय में धर्म के प्रति अनन्य आस्था थी। पिता जी आर्य पुरुष थे। घर पर वैदिक विद्वानों का आगमन होता रहता था। आप सभी से धर्म-ज्ञान प्राप्त करते रहे। महर्षि दयानन्द के जीवन व सत्यार्थप्रकाश आपकी ज्ञान-पिपासा को बढ़ाकर आपको गुरुकुलीय शिक्षा के लिए बाध्य किया। आप हरियाना स्थित 'कालवा गुरुकुल' व गुरुकुल काँगड़ी के स्वामी ब्रह्म मुनि जी आदि के पास में वेद-वेदांगों के अध्ययन में जुट गए। परिणाम-स्वरूप आप धर्मधुरीण होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्देशित पथ के पथिक बन गए।

आचार्य आर्यनरेश जी गत चालीस वर्षों से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में रत रहे हैं। आप विश्व-शान्ति, मानवोत्थान, स्वदेशी आन्दोलन, स्त्री और अछूतोद्धार आदि कार्यों में प्राण-पण से लगे हुए हैं। आप हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान एवं 'सार्वदेशिक आर्य वीरदल' के संरक्षक रह चुके हैं। समय-समय पर महाराष्ट्र व गुजरात तथा उड़ीसा में आने वाले भूकम्प व तूफ़ानों में भी आप सेवा रत रहे।

हिमाचल प्रदेश में आपने 'उद्गीथ साधना स्थली' की स्थापना की है, जहाँ आप व्यक्तित्व विकास एवं आत्मिक उन्नति के लिए योग विषयक शिविर लगाते हैं। देश-विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के अतिरिक्त आचार्य जी ने हिन्दी में लगभग साठ पुस्तकें लिखी हैं। आपके साठ डी.वी.डी प्रवचन उपलब्ध हैं। कुछ ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं –

१. ईश्वर की सत्ता
२. यज्ञ-विज्ञान-परिचय
३. वेद-विज्ञान-परिचय
४. हम अण्डे-मांस क्यों न खायें ?
५. मृत्यु के पश्चात्
६. संस्कार विज्ञान परिचय
७. नारी राख या चिंगारी
८. एक अत्याचार
९. वैदिक मनोविज्ञान परिचय
१०. भाग्यवाद
११. योगेश्वर श्री कृष्ण
१२. प्राण विज्ञान या यौगिक व्यायाम

आचार्य जी आदित्य ब्रह्मचारी हैं। चौंसठ वर्ष की अवस्था होने पर भी प्रतीत होता है कि अभी पैंतीस वर्ष के युवा हैं।

आचार्य जी 'सत्यार्थप्रकाश-मास' के सन्दर्भ में विविध गतिविधियों में अपना योगदान दे रहे हैं।

'श्रावणी पर्व' के दौरान अनेक स्थानों पर आपके प्रवचनों का आयोजन होगा। कार्य-व्यस्तता के कारण आप मात्र दो महीनों तक ही हमारे देश का दौरा कर पायेंगे।

सम्पादकीय
विद्या का महत्व

आर्य समाज द्वारा निर्धारित दस नियमों में आठवाँ नियम है – 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए'। मानव समाज से सारी अविद्याएँ दूर करके सत्य विद्याएँ प्रदान करना हर एक विद्वान् का परम कर्त्तव्य होता है, क्योंकि अविद्या अन्धकार का स्वरूप है और विद्या प्रकाश का प्रतीक है। अज्ञानता के कारण आदमी सही और ग़लत, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, कर्म-अकर्म, योग्य-अयोग्य आदि का बोध नहीं कर सकता है। अज्ञानतावश वह कभी भी अपने जीवन में विद्या का महत्त्व पहचान नहीं सकता है। वह देखता हुआ भी किसी पदार्थ का सही ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता है। किसी से वार्तालाप करते समय सही बातें नहीं बोल पाता किसी की बातें सुनकर भी सही बातें नहीं समझ पाता है। विश्व में कोई भी विद्याहीन इंसान कठिन से कठिन कर्म करता हुआ भी सुकर्म नहीं कर सकता है। और उसका पूरा फल ग्रहण नहीं कर पाता ।

अविद्या तो मनुष्य का महा शत्रु है। विद्या के अभाव में इंसान को सदा हानि ही पहुँचती है, लाभ कभी नहीं होता है। अविद्या के कारण एक व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्याहीन होने के कारण, वह कई तरह के अनुचित व्यवहार करने में उतर आता है। वह कुसंग में पड़ कर दुर्व्यसनों का शिकार हो जाता है। कर्महीन बनकर आलस्य आदि भावनाओं के साथ जीने की आदत बना लेता है। वह अपने बल, तप-त्याग और अनुभव का पर्याप्त लाभ उठा नहीं पाता । अज्ञानतावश वह सत्य-धर्म, योग-शास्त्र, सच्ची ईश्वर-भक्ति के अभाव में परमेश्वर के सही स्वरूप को पहचान नहीं पाता है।

विद्या रहित व्यक्ति बिन पूँछ का पशु माना जाता है, क्योंकि मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है, जिसे ईश्वर ने विद्या ग्रहण करने का वरदान दिया है। अगर एक आदमी विद्याहीन है तो उसमें और पशु में कोई अन्तर नहीं। इसीलिए मानव को बड़े तप-त्याग, परिश्रम और बुद्धिमत्ता पूर्वक जीवन पर्यन्त ज्ञान हासिल करते रहना चाहिए। विद्यार्थियों का जीवन तो विविध प्रकार की विद्याएँ ग्रहण करने का अमूल्य जीवन होता है। जो छात्र बड़ी तपस्या करके शिक्षा प्राप्त करता है, वह अपने परिवारों, सहपाठियों, पड़ोसियों, समाज संस्थाओं में तथा अन्यत्र श्लाघनीय और सम्मानित होता है। उधर जो बच्चा शिक्षा में रुचि नहीं दिखाता, वह विद्या-धन के अभाव में सर्वत्र निंदित होता है। इसी कारण विद्या-धन प्राप्त करने में सभी छात्रगण अपना जीवन तपाते हैं।

विद्या वह शास्त्र है, जिसमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है। विद्या की वृद्धि होने से हमारी बौद्धिक-शक्ति बढ़ती है और सारी अज्ञानता अपने आप दूर होती जाती है। हमारे जीवन से अज्ञानता का अंधकार मिटने लगता है और सही ज्ञान का प्रकाश होता है। सत्य विद्याएँ ग्रहण करके तो मनुष्य सत्यालोक में रहता है। यह ध्यान रहे कि जो भी विद्या सीखने-सिखाने में आदमी को बाधा पहुँचाती है, उसे सीखना उचित नहीं, जैसे कि जादू-टोना की विद्या, झाड़-फूँक विद्या, डकैती-विद्या, ठग-विद्या, आतंकवाद-विद्या आदि हानि कारक होती हैं इन्हें सीखना अनुचित समझा जाता है।

विद्या शब्द विद् धातु से बना है, जिसका अर्थ है जानना, बोध होना, जानकारी प्राप्त करना इत्यादि। विद्या-धन एक ऐसा धन है, जिसका व्यय करने से कभी घटता नहीं, अपितु और बढ़ता जाता है। विद्या-कोश से कोई भी इंसान विद्या को चुरा नहीं सकता है, जबकि धन-कोश, द्रव्य-कोश आदि से चोर हमेशा चोरी कर सकते हैं। विद्या एक ऐसी संपत्ति है, जो जीवन पर्यन्त हमें तरह-तरह की शिक्षाएँ प्रदान करती रहती है, इसी कारण मानव को इससे वंचित नहीं रहना है, इस अमूल्य संपत्ति की खोज करते रहना चाहिए।

विश्व के समस्त दानों में विद्या-दान सर्वोत्तम माना जाता है। मनुष्य को जितना बन पड़े, उतना प्रयत्न करते हुए विद्या दान करते रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है कि सब दानों में वेद-विद्यादान अति श्रेष्ठ है। जिस देश में यथायोग्य सत्यविद्या और वेदोक्त-धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यशाली होता है। आज हमें ज्ञान-विज्ञान ग्रहण करते हुए धर्म-विद्या, शास्त्र-विद्या, ब्रह्म-विद्या, व्यवहार-विद्या, राज-विद्या, शिल्प-विद्या, साईबर और तकनीकी विद्या आदि हासिल करने को पूरा प्रयत्न करना चाहिए, ताकि हम इस आधुनिक युग में भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में सही ज्ञान पाकर मानव-कर्म को निभाने में सफल होंगे। **शेष भाग पृष्ठ २ पर**

सत्यार्थप्रकाश

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

आज से १३९ वर्ष पूर्व आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को लिखवाना आरम्भ किया था बनारस में १२ जून सन् १८७४ में, और लिखवा कर पूरा किया लेगभग ९० दिन बाद। बाद उस महान् ग्रन्थ की जयन्ती मनाना आरम्भ हुआ और आज १२ जून आर्य समाज के इतिहास में एक ऐतिहासिक दिन के रूप में याद किया जाता है ।

हमने मोरिशस में इस दिन की याद में जून के महीने को सत्यार्थप्रकाश मास घोषित कर दिया है और महीने भर सत्यार्थप्रकाश का पठन-पाठन करते हैं, उस पर चर्चा करते हैं, निबन्ध प्रतियोगिताएँ आयोजित करते हैं एवं प्रश्नोत्तरी, संगीत प्रतियोगिता करते हैं तो एक विषय के रूप में उसे रखते हैं।

इस साल शनिवार १ ली जून को हमने आर्य भवन, पोर्ट लुई में उसे मनाने हेतु उद्घाटन किया जिसमें पूरे मोरिशस के आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। पुरोहित मण्डल की मासिक बैठक से फ़ायदा उठाते हुए प्रातः ९.३० बजे यज्ञ किया जिसमें आर्य सभा के नवमनोनीत प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर सपत्नीक यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य बितूला के साथ मण्डल के अनेक पुरोहित-पुरोहिताओं ने पूरा सहयोग दिया। आर्य सभा के कितने अन्तरंग सदस्य उपस्थित थे जिनमें प्रधान तानाकूर जी, उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू, सत्यदेव प्रीतम, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, कोषाध्यक्ष भोलानाथ जिऊत, उपकोषाध्यक्ष विरजानन्द तिलक, उपमन्त्री डा० जयचन्द लालबिहारी, युवक संघ के अध्यक्षा पूनम सुकन (वैरिस्टर) और आर्य सभा के मान्य प्रधान डॉ० निऊर उपस्थित थे।

यज्ञ के बाद भजन-कीर्तन हुए और बारी बारी से सभा प्रधान ने मौके पर उपस्थित जनों का औपचारिक स्वागत किया, पुरोहित मण्डल के स्थानापन अध्यक्ष पं० मणिकचन्द बुद्धु और पं० चुड़ामणि का विषय सम्बन्धी सारगर्भित भाषण हुआ ।

अन्त में प्रश्नोत्तर की बारी आई जिसमें भाग लिया सभा उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम, डा० उदयनारायण गंगू और आचार्य बितूला ने क्रम से समुल्लास १, २, ३, ७, ८, ९ और समुल्लास १० पर प्रश्न किया और तीनों महानुभावों ने सन्तोषजनक उत्तर दिये। अन्त में श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण ने धन्यवाद दिया और शान्ति के बाद सभा विसर्जित हुई।

कार्य का संचालन सभा मंत्री श्री हरिदेव रामधनी ने आरम्भ से अन्त तक बखूबी किया। आशा प्रकट की गई कि पूरा महीना सत्यार्थप्रकाश की धूम देश के कोने कोने में मचेगी।

श्री राजेन्द्रचन्द्र जी मोहित का महाप्रयाण

आर्य जगत् के एक सुपुत्र **श्री राजेन्द्रचन्द्र जी मोहित** रविवार ३० जून को हमें छोड़ गए। महाप्रयाण से कुछेक मास पूर्व आप रोग ग्रस्त थे। रोग-मुक्ति के लिए आपके पुत्र, वीरेन्द्र जी ने आपका साथ भारत तक दिया। महीने भर वहाँ के विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा चिकित्सा होती रही, पर कोई लाभ नहीं हुआ। अन्तिम दिनों में आप शय्या-सक्त हो गये। बड़ी वीरतापूर्वक बिना आह-कराह किये मृत्यु से लड़ते रहे। अन्ततः मृत्यु-देव की ही विजय हुई। इक्यासी वर्ष की आयु में आप चिर-मग्न हो गए।

श्री राजेन्द्रचन्द्र जी बड़े निस्वार्थ समाज-सेवक थे, दरिया-दिल थे। आपने देना सीखा था, लेना नहीं। आपके महाप्रस्थान से आर्य जगत् को अपार क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति शायद ही हो सके। आप वह वृक्ष थे, जिसकी छाया में बहुतों ने विश्राम पाया। दयालुदेव परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुसार आपको सद्गति प्राप्त हो।

डा० उदय नारायण गंगू

आज से पहले कभी .....

डॉ० बीरसेन जागरसिंह

आज से पहले कभी
अनुभव ही नहीं हुआ
कभी महसूस नहीं की
कि एक उद्धारक की कमी
वर्षों पहले से उधार है !

आदिशंकराचार्य आते पुनः
देव दयानन्द जन्मते दोबारा
होता उदय मोरिशसेन्दु
जैसे भारत में भारतेन्दु
गैर तो गैर करते हैं दुर्व्यवहार
हो रही दुर्गति जो अपनों द्वारा
हो रहा जो शोषण अपनों का
मर रही है देश में हिन्दी
मिट रही है माथे की बिन्दी
हिन्दुत्व की कोई पूछ नहीं
दरकिनार हिन्दी चहुँ ओर
सर्वाधिक धार्मिक मसीहे
एवं राजनीतिक रंगे सियार
बन बैठे हैं मौसेरे भाई
देश और जनता बपौती
मानकर करते हैं मनमानी
सूझता नहीं कोई उपाय
भोला-भाला जन लुट रहा है
हिन्दुत्व देश में घूट रहा है
आज से पहले कभी .....

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

पृष्ठ १ का शेष भाग

समस्त शिक्षक-बँधुओं से आग्रह है कि आप बड़ी तन्मयता पूर्वक अपने छात्रों को विद्यादान करने में तत्पर रहें, अभिभावकों से निवेदन है कि आप अपनी संतानों को शिक्षा प्रदान करने में तप-त्याग करते रहें और उन्हें संस्कारी बनाने का प्रयत्न करें, ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें।

आर्य सभा यही कामना करती है कि हमारे उभरते सितारे चतुर एवं सुयोग्य युवा होकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने के योग्य हों । तभी हम सभी देशवासियों का भला होगा, क्योंकि अविद्या हमें अंधकार में रखती है और विद्या हमारे जीवन के सारे घोर अंधकार को नष्ट करके ही रहती है ।

बालचन्द तानाकूर

About Acharya Arya Naresh

Acharya Arya Naresh, an Ex-Engineer, is a revolutionary Vedic Research Scholar who is working for World Peace and upliftment of human beings according to Veda and Ayurveda.

A brief Biography

He is a disciple of Maharishi Dayanand Saraswati who was the pioneer of Swadeshi Movement & worked for upliftment of women, untouchables and non-violence vis-à-vis every creature.

He is also a guide of Ph.D Scholars working on purification of environment through Agni Hotra. He gives lectures in various schools, colleges, villages, religious & public places in Bharat and abroad. He has been working for the past 40 years.

He is an Ex-President of Himachal 'Arya Pratinidhi Sabha'. He runs a personality development program – Om ka Dhyaan, Ved ka Gyan, Yajna ka Anushthan, Gobhakth Shakāhari Santan aur Rashtriye-hit Balidan.

He is the founder of Udgeeth Sadhna Sthali near Solan, Himachal Pradesh where he runs free camps on yoga, personality development, spirituality and other social causes.

Camps are held every year from Tuesday of the 2nd week of June up to Sunday and on special requests.

He has authored various books and video lectures (through DVDs) on numerous Vedic principles. Some of his books in Hindi are :

1. Existence of God
2. Science of Agnihotra
3. Nari – The First Nation Making Light Beam
4. Life after Death
5. Vedic Karma Philosophy
6. Mechanism of Mind & Ashatanga Yoga
7. Dharam aur Mazhab and Aatankwad ka Samadhan

Contact :
Shri Narendra Arya Handloom, Main Road, WZ, A 6/1, Krishna Puri, Tilak Nagar, Delhi- 18. Ph: 987 1264213.

Office : Udgeeth Sadan, H – 4 - C, Gulmohar Apartment, New Delhi - 18

वेद का अनुपम सन्देश

डा० माधुरी रामधारी

'श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।'

मन्त्र का प्रथम शब्द 'श्रुति' है। **'श्रुति'** शब्द 'श्रु' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – 'श्रवण करना'। ऋग्वेदादि संहिताओं के दो नाम हैं – 'वेद' और 'श्रुति'। वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। मनुष्य वेद को सुनकर सत्य और असत्य के भेद का ज्ञान प्राप्त करता है। ऋग्वेद का मंत्र कहता है – **'हि मानवः'** - हे मनुष्य, **'श्रुतिस्मृत्युदितं'** - श्रुति और स्मृति में जो कहा गया है, अगर उसके अनुरूप आचरण किया जाए तो **'धर्ममनुतिष्ठन्'** - धर्म का अनुष्ठान होगा, अधर्म का नाश होगा और धर्म की स्थापना होगी। धर्म की स्थापना से ही **'इह कीर्तिमवाप्नोति'** - इस लोक में कीर्ति प्राप्त होती है, यश प्राप्त होता है। इस लोक में ही नहीं, अपितु परलोक में भी मनुष्य सुखों का लाभ प्राप्त करता है। **'प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्'** - मरकर भी वह उत्तम सुख की प्राप्ति करता है।

वेद पढ़ने तथा सुनने से ही सच्ची विद्या का ज्ञान होता है, मनुष्य विद्वान् बनता है। धरती पर जब मनुष्य की सृष्टि हुई तब उसे कोई सूझ-बूझ नहीं थी। वह नग्न रूप में धरती को अपना पलंग और छत को अपना आसमान बना चुका था। धीरे-धीरे वह समझने लगा कि सर्दी, धूप, वर्षा, हवा आदि से उसे अपने शरीर की रक्षा करना आवश्यक है। यह समझने पर मनुष्य अपने शरीर को ढँकने लगा। खूँख़्वार जानवरों से अपनी रक्षा करने के लिए वह गुफ़ाओं में रहने लगा। फिर उसकी समझ में बात आयी कि गुफ़ा में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति यदि एक खाद्य-पदार्थ ढूँढकर लाए और प्राप्त सभी खाद्य-पदार्थों को बाँटकर खाए तो जीवन आसान होगा। यह समझने पर मनुष्य आपसी सहयोग करने लगा। यहीं से संस्कृति आरम्भ हुई।

धीरे-धीरे धरती पर मनुष्य की आबादी बढ़ी और खाने की वस्तुएँ कम होने लगीं। मनुष्य समझ गया कि अब उसे परिश्रम करना है। धरती में बीज डालना है और खाद्य-पदार्थ उत्पन्न करना है। यह समझने पर मनुष्य खेती करने लगा। खेत की देख-रेख करने के लिए वह घास-फूस का घर बनाकर उसमें रहने लगा। यहीं से सभ्यता का जन्म हुआ।

समय के साथ मनुष्य की अपनी ज़मीन, अपना खेत, अपना घर, अपना परिवार और अपनी सम्पत्ति होने लगी। उसे इन सब के प्रति लगाव होने लगा। सम्पत्ति पर वह पूर्ण अधिकार जमाने लगा। दूसरे की सम्पत्ति देखकर उसे ईर्ष्या होने लगी। सम्पत्ति के पीछे झगड़े भी होने लगे। द्वेष, घृणा और शत्रुता का वातावरण गरम हुआ। ऐसी दशा में ऋषियों ने साधना के माध्यम से ईश्वर द्वारा प्राप्त वेद ज्ञान को फैलाने का विचार किया।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

'श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।'

पृष्ठ २ का शेष भाग

वेदों की उत्पत्ति मनुष्य के हित के लिए हुई। संसार में स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा के कारण दुख न हो, अन्धकार न हो, इसीलिए ईश्वर ने वेद का प्रकाश दिया। मनुष्य की सारी दुर्बलताओं को दूर करने, सारी मलीनता को धो डालने की शक्ति वेद में है। यही कारण है कि आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द ने कहा 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।' ऋग्वेद कहता है **'इह कीर्तिमवाप्नोति'** - वेद के पठन-पाठन से ही इस संसार में कीर्ति, यश, मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। मात्र इतना ही नहीं **'प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्'** - वेद पढ़ने वाला मृत्यु के बाद भी उत्तम सुख पाता है।

एक उदाहरण प्रस्तुत है – एक पिता अपनी साइकिल में बैठकर बाज़ार जाने के लिए तैयार हुआ तो उसका छोटा बेटा दौड़ा उसके पास आया और दोनों हाथों को ऊपर उठाकर अपने पिता से कहा 'पिता जी, मुझे गोद में ले लीजिए मैं आपके साथ जाऊँगा'। पिता ने घूमकर बच्चे पर एक नज़र डाली तो देखा कि उसके बाल बिखरे हुए हैं, उसका चेहरा मैला है। उसके कपड़े भी गंदे हैं । पिता ने बेटे से कहा –

'बेटा, मैं तुम्हें ज़रूर अपने साथ ले जाऊँगा, लेकिन पहले तुम घर लौटो और अपनी माँ से कहो कि वह तुम्हें नहलाकर साफ़ कपड़े पहनाए और तुम्हारे बालों में कंघी करे। तुम साफ़-सुथरा हो जाओगे तो मेरे साथ अवश्य चल सकोगे ।

पाठक वृन्द, मनुष्य की आत्मा निर्मल हो या नहीं, लेकिन शरीर का अन्त होने पर आत्मा चाहती है कि उसे परमात्मा अपने साथ ले ले, उसे अपनी गोद में ले ले। परन्तु उस समय जब परमात्मा देखते हैं कि मनुष्य की आत्मा में मैल लगी हुई है तब वे आत्मा से कहते हैं –

'मैं तुम्हें अपने साथ अवश्य ले जाऊँगा, परन्तु पहले तुम धरती पर लौटो, माँ के पास जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें साफ़ करे। तुममें लगी मैल निकल जाए। तुम साफ़-सुथरा हो जाओ तो मैं तुम्हें अपने साथ ले लूँगा ।'

धरती पर आत्मा की माँ कौन है? ऋग्वेद कहता है – 'आत्मा की माँ वेद है'। वेद-माता ही आत्मा को नहलाकर उसपर जमी धूल को साफ़ करती है और उसे परमात्मा के साथ जाने, परमात्मा से मिलने के लिए तैयार करती है। वेद-माता के निकट पहुँचते ही आत्मा पर लगे काम, क्रोध, मद, मोह के दाग़ निकल जाते हैं।

राजा दशरथ को ज्ञात था कि वेद द्वारा ही **'धर्ममनुतिष्ठन्'** - धर्म का अनुष्ठान होता है। राजा दशरथ चाहते थे कि राम, लक्ष्मण, भरत और शतुघ्न धर्म के मार्ग पर चलें। इसीलिए उन्होंने अपने पुत्रों को वेदादि धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करने हेतु गुरु वशिष्ठ के आश्रम में भेजा।

लंका का राजा रावण भी वेदों का अध्ययन करके महापुरुष बन गया था। अपनी प्रजा के लिए वह आदर्श राजा बन गया था। युद्ध-भूमि पर जिस समय राम रावण की नाभि में बाण चलाते हैं और रावण धरती पर गिरता है, उस समय श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं –

'देखो लक्ष्मण, रावण वेदों का ज्ञाता है, विद्वान् है। अब उसके शरीर से प्राण निकलने वाले हैं। तुम जल्दी करो । शीघ्र ही रावण के पास पहुँचो और उसके प्राण त्यागने से पहले उससे कुछ सीख आओ।'

राम की आज्ञा का पालन करते हुए लक्ष्मण तीव्र गति से रावण के पास पहुँचता है और उससे कहता है –

'मैं आपसे ज्ञान प्राप्त करने आया हूँ, आप कृपया मुझे कोई संदेश दीजिए, ज्ञान दीजिए।'

अपनी अन्तिम साँस लेने से पहले रावण लक्ष्मण से कहता है – 'सुनो लक्ष्मण, सीता को पाने की ज़िद्द में मैं अपनी अच्छी आदतों को भूल गया था। चारों वेदों का अध्ययन करके मैं ज्ञानी बना था। आदर्श राजा बना था। मेरी प्रजा बहुत सुखी थी, लेकिन ईश-वरदान पाने के बाद मुझे लगा कि मेरे समान दूसरा कोई ज्ञानी नहीं है दूसरा कोई शक्तिशाली नहीं है। मैंने वेद का पठन-पाठन करना छोड़ दिया। मुझमें अहंकार बढ़ने लगा । इसीलिए मैं राम को पहचान नहीं पाया और अपनी प्रजा को युद्धभूमि में ढकेलकर मैंने उनके साथ अन्याय किया। हे लक्ष्मण! तुम ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान से अलग न होना, वेद-ज्ञान से अलग न होना। मुझसे जो भूल हुई, उसे न दोहराना।'

पाठक गण, धर्म के मार्ग पर चलने का एक ही उपाय है - वेदों से जुड़े रहना। जिस प्रकार अपनी सन्तानों पर माता-पिता का स्नेह होता है और माता-पिता सन्तान के सुख की व्यवस्था करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के प्रति ईश्वर की कृपा होती है और मनुष्य के सुख के लिए ही ईश्वर ने वेद-विद्या की व्यवस्था की है। इस विद्या के सहारे मनुष्य – **'प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्'** - मरकर भी उत्तम सुख पाता है। इस लोक और परलोक दोनों को सुधार देता है।

४९ वाँ वार्षिकोत्सव

एस. प्रीतम

रविवार दि० ०९.०६.१३ को दिन के १२.३० बजे काँ फूक्रो आर्य समाज और आर्य महिला समाज ने आर्य सभा के तत्वावधान और प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से अपनी हिन्दी पाठशाला का ४९ वाँ वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम, अन्तरंग सदस्य और ज़िला परिषद् के प्रधान श्री रवीन्द्रसिंग गौड ने अपनी उपस्थिति दी थी। बच्चों द्वारा रोचक कार्यक्रम पेश किया गया और उपस्थित महानुभावों द्वारा बारी बारी से भाषण हुआ। कार्य का संचालन श्री बृजमोहन नन्दलोल ने किया।

सभा प्रधान श्री तानाकूर ने सुन्दर लघु भाषण देते हुए बच्चों के अभिभावकों से विनम्र माँग की कि हिन्दी की पढ़ाई न केवल आर्य समाजों में हो ही रही है, बल्कि सभी सरकारी प्राथमिक पाठशालाओं के अतिरिक्त गैर सरकारी स्कूलों में भी हो ही रही है। माध्यमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर में भी हिन्दी की कक्षाएँ चलायी जा रही हैं। पर दुःख की बात है कि हिन्दी बोली नहीं जा रही है। इसकी कमी हमें खटक रही है।

मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर ने कहा कि मोरिशस में आर्य समाज के ज़रिए जो हिन्दी की सेवा हुई वह आद्वितीय रही फिर भी अभी और करना बाक़ी है।

सभा उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने कहा कि यदि आर्य सभा नहीं होती तो न हिन्दी होती और न इतनी जल्दी हमें स्वराज प्राप्त होता। हिन्दी भाषा और सत्यार्थप्रकाश ने मोरिशस की काया ही पलट दी। रवीन्द्रसिंह ने भी अपना संदेश दिया। कार्य का संचालन अवकाश प्राप्त मुख्य अध्यापक और वर्तमान समाज मंत्री श्री बृजमोहन नन्दलोल ने किया ।

THE D.A.V. DEGREE COLLEGE

The D.A.V. Degree College, affiliated to Kurukshetra University, offers vacancies in the following posts :

(1) Lecturers in Philosophy (Part-time)
(2) Lecturers in Hindi (Part-time)
(3) Lecturers in Sociology (Part-time)
(4) Manager (Full-time)

Qualifications for Posts (1) and (2)

M.A., Ph.D, P.G.C.E. in the relevant subject or any other alternative qualification acceptable to the authorities.

Teaching experience in B.A. and M.A. courses are essential.

Remuneration : Lecturers will be remunerated as per period.

1. Duties : Lecturers in Philosophy will conduct classes at B.A. and M.A. Levels in the following Papers.

(i) Logic (Indian & Western)
(ii) Indian Western Epistemology
(iii) Indian and Western Metaphysics
(iv) Indian and Western Ethics
(v) Modern Indian thought
(vi) Contemporary Western Philosophy
(vii) Philosophy of Action
(viii) Philosophy of Religion I
(ix) Philosophy of Religion II
(x) Optional Paper – Western Ethics Group A
Applied Ethics Group B
(xi) Outlines of Indian Philosophy
(xii) Greek Philosophy

2. Lecturers in Hindi will conduct B.A. and M.A. classes in the following papers.

(i) Bhasha Vijyan ewam Hindi
(ii) Hindi Sahitya ka Itihas
(iii) Adhunic Hindi Sahitya
(iv) Adhunic Hindi Kavya
(iv) Jayshankar Prasad / Premchand Vishesh Adhyayan
(v) Prachin ewam Madhyakalin Kavya
(vi) Kavya Sastra Ewam Sahityalochan
(vii) Prayojan mulak Hindi
(ix) Bharatiya Sahitya
(x) Kabirdas – Vishesh Adhyayan
(xi) Kahani aur Natak
(xii) Sansmaran
(xiii) Anuvad aur Sahitik Nibandh
(xiv) Poetics : Ras, Chand aur Alankar
(xv) Dissertation

3. For the post of Manager

Qualifications : Applicants must be holders of the Higher School Certificate (H.S.C.) and possess a degree in Management. A sound knowledge of Hindi, English and Indian Philosophy is essential.

Duties :

(1) To implement the rules and regulations of the Institution.
(2) To organize day to day activities as from 9.00 a.m. to 4.00 p.m.
(3) To assist lecturers and Administrative staff in the smooth running of the Institution.
(4) To enroll students in the diverse courses.
(5) To be responsible for sports activities.
(6) To be present at meetings and conferences.
(7) To conduct correspondence with the Kurukshetra University and other Institutions.
(8) To provide information about the staff employed at the Degree College.
(9) Any other cognate duties assigned by the Academic Dean.

The selected candidate will be remunerated according to qualifications on a flat rate on monthly basis.

Applications should reach the Academic Dean, D.A.V. Degree College, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles on or before 15th July 2013 at 3.00 p.m.

The Institution reserves the right not to call any applicant for an interview.

Dr. Oudaye Narain Gangoo
Academic Dean

Discourse on Satyārtha Prakāsh

At Ilot Arya Samaj – A Resounding Success

S. Bissessur

Under the auspices of the Arya Sabha Mauritius a discourse on Satyārtha Prakāsh was delivered by Pundit M. Boodhoo at the Ilot Arya Samaj (Pamplemousses) Branch No. 20, on 11th June 2013 in the afternoon.

This instructive and enlightening discourse, which is an annual feature, marked with immense zeal and spiritual gusto, was held under the chairmanship of our dynamic - Dr Jaychand Lallbeeharry, who acted as master of ceremonies. The entire atmosphere was virtually charged with spiritual vibration. The hall was packed to capacity with both children and adults.

At the very outset, Pundita Pockraj, laying great emphasis upon the importance of reading 'Satyārtha Prakāsh', the Magnum Opus of Swāmi Dayānanda, said that Swamiji came to us as a Morning Star, woke us up from our deep slumber, aromatized our lives with the sweet fragrance of his teachings and taught us to walk on the path of virtue and dignity, proud of our past traditions, past history and our rich cultural heritage. He passed on to mankind through 'Satyārtha Prakāsh / Light of Truth, the very essence of our scriptures, the experience of his life, his beliefs and his sallies on the superstitious and illusions prevailing in the world.

Emphasizing upon the significance and importance of reading Satyārtha Prakāsh, Pundit M. Boodhoo gave an impressive account of how Swāmiji did his level best to write this famous and most precious Magnum Opus of his. Thus, he explained to the audience very clearly that it was written at a time when entire India was plunged in ignorance, untruthfulness and illusion. The Indian people believed in false teachings of fake scriptures, in superstition and malpractices. It was Swāmi Dayānanda with his Satyārtha Prakāsh who came to their rescue and set them on the right track.

At the same time, Pundit M. Boodhoo highlighted the very significance of the fourteen chapters / samullas of Satyārtha Prakāsh. This famous book was written in fourteen chapters and a chapter on the belief and disbeliefs of Swāmi Dayānanda. Each chapter delineates the very milestones of human life and human dignity as well :-

Chapter I – Meaning and explanation of AUM and other names of Ishwara, the one God of the Universe. Names of God are many but there is only one God, not many.
Brahma – The Creator, who is above all, greatest of all and of infinite strength.
Varuna – means God who is the most excellent of all, he accepts self-disciplined, learned people, those who desire salvation, the emancipated and the pious.
Vishnu – Omnipresent, he pervades all the movable and immovable objects of the world.
Hota – God is the Supplier of all needs of the souls and accepts what is worth accepting from them.
Aryama – He justly deals out the awards of sins and virtues to everyone. i.e, to the sinful and the virtuous
Mitra - He loves all and is worthy of being loved by all.
Ketu - Liberator from natural calamities, diseases and sufferings of the emancipated souls.
Indra – Supreme ruler of the world, he is powerful and resplendent.
Rahu – Liberator from physical ailments, he rejects the wicked and frees others from the hands of the wicked.
'Surya atma jagat tasthusha' -- Surya – sun, **atma** – rays of light, energy, soul, **jagat** - man and other living creatures, **tasthusha** – non-living or nature. Henceforth **Surya** also is the very name of God. His soul or light penetrates the whole universe.
Chapter II – Upbringing of children. Rearing and teaching of children.
Chapter III – Formal Education – and the discipline of Brahmacharya.
Chapter IV – Grihasta Ashrama - Marriage and household.
Chapter V – Vānaprastha and Sannyāsa Ashram – Renunciation and reclusion / Retirement and renunciation, and social service.
Chapter VI – Raj Dharma – Socio-economic organization, government and administration.
Chapter VII – Ishwar (God) Jivātma (soul) and Revelation (Védas)
Chapter VIII – Creation, sustenance and dissolution of the world & the universe
Chapter IX – Knowledge and ignorance, freedom and bondage.
Chapter X – Ethics of good conduct and humanitarian
Chapter XI – Way of living – food and drink conducive to good health. Alcoholic drinks, tobacco & drugs, flesh eating to avoid at all cost.
Chapter XII - Chapter XIII & XIV } Comments on
(a) theist and atheist cults of India
(b) Christian and Moslem Religions.
Chapter XV - Beliefs and disbeliefs of Swāmi Dayānanda.
N.B. – By writing Satyārtha Prakāsh, Swāmiji has left no stone unturned to liberate people from untruth, illusion and darkness of ignorance.

During his discourse, Dr Jaychand Lallbeehary, impressed upon the audience that, as a Reformer of human life in all its aspects -- social, cultural, political and spiritual -- Maharshi Dayānand Saraswati stands unique and unparalled in history. Besides, being the greatest Preceptor of the Vedas, he was also a prominent and prolific writer. He has written dozens of books, among which the Satyārth Prakāsh / Light of Truth is his masterpiece. Critics proclaim it as his 'Magnum Opus' and qualify it as the Encyclopedia of religions and universal values. Dr J. Lallbeharry also pointed out that Maharshi Dayānand Saraswati believed in monotheism and truth. He further added that it has been proved in Satyārtha Prakāsh that inequity (injustice and unfairness) leads to social unrest, war, unhappiness, sufferings, poverty and disruption of good social life.

Dr J. Lallbeeharry concluded the function by thanking everybody present, and particularly the organizers and the collaborators.

On the whole the function was a success. The discourses were enlightening, thought provoking, rich in content, and were also followed by a genuine and lively discussion among the audience.

Satyārtha Prakāsh Jayanti is virtually the period when all of us should make it a must to read Satyārtha Prakāsh, and understand the very essence of Vedic teachings and the Vedic way of life.

"To re-establish communion with God – READ SATYARTHA PRAKASH"

Om ! Svaryanto nāpekshanta ā dhyām – rohanti rodassi.
Yajyam yé vishwatodhāram suvidwānso viténiré.

Yajur Véda 17/68

cont. from pg 1

C'est bien cette attitude qui amène la paix, le bonheur et la prospérité dans le monde. Le salut de l'homme se trouve dans l'abnégation et dans le service à l'humanité.

Le Yajna a un impact positif sur la société, et la dirige vers le progrès. Cette pratique engendre la moralité, le piété, le sacrifice de son égo, la serviabilité, la générosité et l'autosuffisance.

Cette action (Le Yajna) nous est bénéfique de plusieurs autres façons :
(i) Elle nous aide à acquérir une maîtrise parfaite de soi. (self-control)
(ii) Elle donne lieu à l'harmonie et au bonheur dans la famille.
(iii) Elle contribue à l'assainissement et au progrès de la société.
(iv) Elle éveille l'élan de patriotisme parmi le peuple.
(v) Elle nous unit à Dieu et purifie notre âme.
(vi) Elle a un effet positif sur la nature car elle épure l'atmosphère et rend l'environnement sain.

En somme, le Yajna est la source de toute prospérité et de la réussite dans la vie et ouvre la voie à la félicité éternelle ('Moksha' en Hindi). Le Yajkartā (celui qui pratique le Yajna) sera toujours à l'abri du besoin et bénéficiera continuellement du bonheur éternel.

MAURITIUS ARYA YUVAK SANGH DHARMIC COMPETITIONS

(Under the Aegis of Arya Sabha Mauritius)

SEND YOUR NAMES BY **15th JULY 2013**

ARYA SABHA MAURITIUS, 1 MAHARISHI DAYANAND ST, PORT LOUIS

JOIN US FOR DHARMIC COMPETITION

1. *GURU MANTRA UCCHARAN & INTERPRETATION (Bhavarth) – age limit 7 years only*
2. *MEAL PRAYER UCCHARAN & INTERPRETATION (Bhavarth) – age limit 7-8 years only*
3. *MORNING PRAYER UCCHARAN – age limit 9 years only*
4. *BED TIME PRAYER UCCHARAN - age limit 10 years only*
5. *SANDHYA UCCHARAN & INTERPRETATION (Bhavarth) – team of 6 age limit 11-15 years only*
6. QUIZ COMPETITION ON SATYARTH PRAKASH – *team of 3 age limit 15-25 years only*

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

ACTIVITIES OF ACHARYA NARESH JI

DAILY PROGRAMME

Day/Dates	Time From	To	Place	Con tact Persons	Tel. Nos
Mon. 01.07.13	10.30 a.m.	11.30 a.m.	Vedic Vani (MBC)	Pt. Reechaye	
" " "	1.30 p.m.	2.30 p.m.	DAV Port Louis		
Tues. 02.07.13	11.00 a.m.		Amrit Vani Recording MBC		
Wed. 03.07.13	9.30 a.m.	12.00 hrs	Workshop - Purohit DAV Degree, Pailles		
Thurs. 04.07.13	9.30 a.m.	12.00 hrs	" " "		
Fri. 05.07.13	9.30 a.m.	12.00 hrs	" " "		
" " "	4.30 p.m.	6.00 p.m.	Petit Sable Arya Samaj	Pt. Daiboo	
Sat. 06.07.13	1.00 p.m.	2.00 p.m.	Purohit Mandal - Arya Sabha	Pt. Reechaye	
Sun. 07.07.13	10.30 a.m.	12.00 hrs	Mohith Hall, L'agrement, St. Pierre	Mr B. Tanakoor	9136808
Mon. 08.07.13	8.00 a.m.	10 recording	Shrawani MBC	Pt. Daiboo	
Tues. 09.07.13	11.00 a.m.	State House -	Reduit courtesy visit with President of Republic		
Fri. 12.07.13	4.30 p.m.	5.30 p.m.	Chamouny A.S	Mr R. Ramjee	796 9526
Sun. 14.07.13	8.30 a.m.	10.00 a.m.	Tyack A.S.	Mr R. Ramjee	"
Mon. 15.07.13			Vedic Vani MBC	Pt. Daiboo	
Thurs. 18.07.13	9.45 a.m.	12.00 hrs	Mangalacharan MBC	Pt. Daiboo	
Sun. 21.07.13	9.00 a.m.	11.00 a.m.	Mare La Chaux	Mrs Ramchurn	
Mon. 22.07.13			Vedic Vani	Pt. Daiboo	
Tues. 23.07.13	9.30 a.m.	12.00 hrs	Arya Sabha Mauritius		
Wed. 24.07.13	10.00 a.m.		Isidore Rose Arya Samaj	Mrs Ramchurn	4151183
Thurs 25.07.13	3.30 p.m.	5.30 p.m.	Gaytree Bhawan Flacq	Mrs Ramchurn	4151183
Fri. 26.07.13	4.00 p.m.	4.30 p.m.	Shri B. Bissessur, Grand Bay	Bisnoodave Bissesur	
Sat. 27.07.13	4.00 p.m.	5.00 p.m.	Gros Billot Arya Samaj	Mr Tarachan Torul	6276342
" "	6.30 p.m.	7.30 p.m.	Shri H. Ramdhony - Residence		
Sun. 28.07.13	8.30 a.m.	9.30 a.m.	Camp Rabeau, Riv. du Poste	A.S. R. Ramjee	7969526
Sun.28.07.13	11.00 a.m.		Shri H. Ramdhony - Residence		
Mon. 29.07.13	10.30 a.m.	12.00 hrs	Vedic Vani	Pt. Daiboo	
Wed. 31.07.13	3.00 p.m.	5.30 p.m.	Mahebourg A.S.	Mr Dharam Gangoo	

to be continued .....